लक्ष्य द्वीप समूह , भारत का समुद्री पुरातत्व

■ सिला त्रिपति
■ राकेश शर्मा

सारांश

लक्षद्वीप समूह पूर्व और अफ्रीकी देशों से दूर दक्षिण एशिया के समुद्री मार्ग पर अवस्थित है । व्यापार मार्ग होने के नाते नावों और जहाजों द्वारा ताज़ा पानी लेने के लिए रास्ते का एक ठहराव के रूप में लक्षद्वीप का इस्तेमाल होता रहा है । सुएज कैनाल के खुलने से पहले जहाजी मार्ग के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका लक्षद्वीप ने निभाई है। लक्षद्वीप में मानव जनवसती और समुद्री संपर्क के चित्रण के रूप मैं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) और राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एन.आई.ओ) द्वारा पुरातत्विक अन्वेषण किया गया और आंड्रोथ ,कावारत्ती ,कलपेनी ,मिनीकॉय से विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन ,रोमन सिक्के ,बुद्ध मस्तक और पत्थर के लंगर बरामद किए गए हैं । इसके अलावा तटवर्ती अन्वेषणों में मिनीकॉय और सुहेली पार जहाजों के डूबने का अन्वेषण भी शामिल है।

इस दस्तावेज़ का विवरण लक्षद्वीप मैं प्रारंभिक मानव जनवसती और समुद्री संपर्क और डूबे हुए जहाजों के पुरातत्विक खोज के संदर्भ मैं है ।

प्रमुख शब्द :बौद्ध धर्म ,लक्षद्वीप ,समुद्री व्यापार ,बर्तन ,नष्ट जलयान ,प्रस्तर लंगर ।

उपक्रम

समुद्री व्यापार मैं द्वीप एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । प्राचीन काल से, दूनिया भर में द्वीपों को ताज़ा पानी लेने के लिए रास्ते के एक ठहराव और आपातकालीन स्थिति में आश्रय के लिए एक मध्यवर्ती जगह के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसी प्रकार भारत के पूर्वी तट पर अंडमान और निकोबार और पश्चिमी तट पर लक्षद्वीप का समुद्री व्यापार में सदियों से एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है । दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और चीन ने नौकायन के लिए अंडमान निकोबार द्वीप समूह को एक ठहराव स्टेशन के रूप मैं इस्तेमाल किया था जबकि अफ्रीकन ,पारस की खाड़ी वाले देशों और लाल सागर तट पर नौकायन करने वाले नाविकों के द्वारा लक्षद्वीप को रास्ते के ठहराव के रूप मैं इस्तेमाल किया गया था । भारतीय पुरातात्विक खोज प्रमाण के अनुसार अंडमान द्वीप मैं मानव वस्ती की स्थापना 2200 वर्ष पुरानी है ,हालांकि इस बात की प्रबल संभावना है कि यह तारीख बहुत वर्ष आगे भी हो सकती है ,क्योंकि व्यापक जांच और अन्वेषण अभी तक नहीं हो पाया है । जबकि प्राग ऐतिहासिक काल पर प्रकाश डालें तो लक्षद्वीप मैं मिट्टी के बर्तन ,रोमन सिक्के, बौद्ध मस्तक, मूर्तियाँ, पत्थर के लंगर आदि का पता चलता है ।

36 द्वीपों के समूह लक्षद्वीप दक्षिण अरब सागर और भारत के पश्चिम तट के बीच 8 एवं 12′37(ऊ) अक्षांश तथा 71′′ से 74(पू) देशांतर के मध्य (जो लक्कडीव्स के नाम से भी जाना जाता है) कई जलमग्न तटों, खुली प्रस्तर भित्ती तथा रेत के ढेर (छबि1) के साथ फैला हुआ है। उन 36 द्वीपों मैं से केवल 11 आवास के योग्य हैं । अधिकाशं द्वीप दक्षिण पश्चिम मौसूमी वायु के रोष से सुरक्षित हैं ,क्योंकि वे अपने पश्चिमी किनारों पर प्रवाल भित्तियों द्वारा समुद्री ताल के साथ सटे हुए हैं जबकि लक्षद्वीप के कुछ द्वीप छिछले पानी में जलमग्न चट्टानों की विशेषता लिए हैं । लगभग सभी प्रवाल द्वीप उत्तर–पूर्व ,दक्षिण–पश्चिम अवस्थिति के साथ पूर्व मैं निचले द्वीपों के साथ अवस्थित हैं । पश्चिम में एक चौड़ी एवं सुविकसित प्रवाल भित्ती एवं इसके मध्य

के एक समुद्री ताल एक या अधिक चैनल के द्वारा खुले समुद्र में मिली हुई है। केवल आंड्रोथ द्वीप पूर्व–पश्चिम दिशा की ओर उन्मुख है । इसमें कोई बड़ी स्थलाकृतिक विशेषता नहीं है और ज्यादातर द्वीप 6 मीटर से भी कम निम्न और समांतराल समुद्री उच्चता पर अवस्थित हैं । लक्षद्वीप द्वीप समूह के प्रारंभिक इतिहास के बारे मे अल्प जानकारी उपलब्ध है । पहले यह समझा जाता था कि लक्षद्वीप के द्वीप मैं बसने बाले लोग मुख्य रूप से भारत की मुख्य भूमि के निवासी हैं जो 14वीं सदी में इस्लाम में धर्मातंरित हुए थे । संभवतः इस द्वीप मैं बसने वाले निवासी भारत की मुख्य भूमि और अफ्रीका, अरब और लाल सागर के बीच समुद्री व्यापार मैं संलग्न थे। हांलाकि हाल ही में पुरातात्विक अन्वेषणों से यह संकेत मिला है कि इनमें से कुछ द्वीपों मैं 5–6ठी सदी के बाद बौद्ध धर्म अस्तित्व में था । यह आलेख लक्षद्वीप द्वीप समूह से पाये गए समुद्री संपर्कों और जहाज के टुकड़ो के पुरातात्विक अवशेषों का वर्णन करता है ।

निश्चित रूप से यह से पता लगाना कठिन है कि कब लक्षद्वीप को मानव बस्ती की स्थापन के लिए अधिकार में लिया गया था । स्थानीय लोगों का मानना है कि इन द्वीपों पर जहाज की तबाही से बचे हुए लोग आकर बसे थे । कलपेनी से टेरकोटा कलाकृतिओं के अध्ययन से से पता चलता है कि यहां मानव बस्ती 1511 ईपू (1911 सहगल) के आसपास शुरु हुई थी क्योंकि लगभग 1511 ईपू के आसपास भारत के पश्चिमी तट से मिस्र को जाने वाली जहाजें ताज़ा पानी और अन्य प्रयोजनों के लीए इन द्वीपों का इस्तेमाल करती होंगी । गुजरात के लोथल के खनन से प्राप्त टेराकोटा गोरीला से यह पता चलता है कि भारतीय नाविकों का पूर्वी अफ्रीका तट के साथ संपर्क था (राव 1973)। इससे यह पता चलता है कि गुजरात के नाविकों ने पूर्व अफ्रीकी तट पर पहुँचने के लिए लक्षद्वीप को पार किया होगा ।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एनआईओ) ने इन द्वीपों का अन्वेषण किया यह जानने के लिए कि इन द्वीपों में पहले से बसने वाले लोगों की जीविका निर्वाह का साधन एवं पुरातात्विक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष क्या था ?

पुरातात्विक प्रमाण

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण संस्थान ने एंडरोथ, अगत्ति, अमीनी, चेरियाम, कालपेनी, कावारत्ती और मिनिकोय पर तटवर्ती अन्वेषण किए। लक्ष्यद्वीप के आवास योग्य टीले स्थानीय रूप से 'कलिकत्ता' और 'कुंथाथुपल्ली' के नाम से जाने जाते हैं । प्राप्त प्रमाण दो चरणों में हुए आधिपत्य को दर्शाते हैं जैसाकि रेत की गाद के मध्य अंतर और आंड्रोथ के ऊपरी स्तरों के प्राचीन संरचना के साक्ष्य देखने के लिए मिलते हैं । (छबि 21) (आईएआर1983–84)

आंड्रोथ द्वीप के दूसरी और मूंगा रेत से ऊपर 2.5 मीटर की गहराई पर मिट्टी के बर्तन के टूकड़े बरामद किए गये जो यह दर्शाते है कि कोरल संरचनाओं के कुछ समय के बाद अल्प समय के लिए द्वीप को अधिकार कर लिया गया था । इस क्षेत्र की विस्तृत जांच से मानव आधिपत्य के 3 स्तरीय प्रमाण मिलते है (छबि 3)। अधिकृत स्तरों पर मिट्टी के बर्तन के टुकड़े, काली राख़ के ढेर और जानवरों की हड्डियां पाइ गई हैं । आंड्रोथ ,अमीनी और कलपेनी से लाल बर्तन के टुकड़े एकत्र किए गए थे , लेकिन यह प्रतीत होता है कि यह मुख्य भूमि से आयात किए गए हैं । बर्तनों और सिक्कों के अलावा ,प्रवाल खंड से बना दांत और जीभ के साथ राक्षसी चेहरा आंड्रोथ से बरामद किया गया। इसके अलावा (राव 2116) का कहना है कि आंड्रोथ के केरकड्डा मोनथमपल्ली ,पेरुमपल्ली और पुदीयापल्ली क्षेत्र छोटे आकार की मूर्तियाँ जैसेकि ,पौराणिक काल के जानवर ,शेर , कमल की पंखुड़ियों सहित गोल पत्थर से बने उत्कीर्ण स्तुपिका इत्यादि से परिपूर्ण है। कलपेनी के एक घर से ग्रेनाइट पत्थर में खुदी हुई कम उभरी एक मस्तकविहीन महिला की आकृति मुड़े हुए हाथ और मकर(मगरमच्छ)के उपर खड़ी हुई पाई गई थी । उसके बाईं ओर एक लोटे के आकार का बर्तन और 'ढ' के आकार की एक वस्तु जोकि संभवतः हाथ संभालने वाली लकड़ी हो सकती है उसके दाहिने ओर चित्रित की गयी थी एवं यह आकृति देवी गंगा की हो सकती है । प्राचीन काल की कुछ और मूर्तियाँ इस द्वीप से बरामद की गई थीं (व्यक्तिगत संचार एके शर्मा)। जामा मस्जिद, मजार और अगत्ती के पास वालिउल्लाह मजार क्षेत्र के देख–भाल मैं मध्यकालीन मिट्टी का बर्तन पाया गया है । चेरियाम के एक खाली द्वीप में एक छोटा जलाशय देखा गया जिससे यह पता चलता है कि प्राचीन काल मैं यह द्वीप बसा हुआ था । (आईएआर1983–84)

प्रारंभिक मानवीय आधिपत्य एवं नष्ट जलयानों यदि कोई हो की खोजबीन का जिम्मा लेते हुए एनआईओ ने 1994 में आंड्रोथ, अगत्ति, अमीनी, कदमात और कारावत्ति मे एक तटवर्ती और अपतटवर्ती अन्वेषण किया । कवरत्ती के अन्वेषण में लाल बर्तन ,हल्के लाल बर्तन ,बादामी बर्तन और लाल पोलिश वाले बर्तनों का पता चला (आरपीडब्लू) (राव एट अल1995–96; वोरा 1994) उजिरा हाबिबुल्ला मस्जिद टीले के पास खोज करके अनेक मिट्टी के वर्तन के टुकड़े बरामद हुए। लेकिन उनमें से अधिकांश लाल बर्तन हैं और कुछ हल्के लाल और काले बर्तन है (चित्र4) । आंड्रोथ के आवास योग्य टीले से बड़ी संख्या में लाल वर्तन ,हल्के लाल बर्तन और कुछ काले बर्तन के टुकड़े प्रकाश में आये हैं (चित्र5) । काबारत्ती और आंड्रोथ से एकत्र किए गए बर्तन के टुकड़े आकार में समान हैं ,जिनमें मुख्य रूप से छोटे बर्तन और हांडी शामिल हैं । रोचक बात यह है कि ,एकत्र किए गए टुकड़ों में से कोई भी मिट्टी के बर्तन के आकार के नहीं है ,लेकिन बर्तनो के किनारों के टुकड़ों में नालीदार, कटावदार किनारे ,चौकोन कटावदार वाले किनारे शामिल हैं । इन बर्तनों में ज्यादातर अधजले, चाक पर बने और इनके अंदर की लकीरें दिखाई दे रही हैं, कई टूकड़ों में इनकी मोटाई मध्यम से मोटे और कई भागों मैं पतले से मध्यम हैं । बर्तन के टूकड़ो मैं टूटी हुई आकृति और चित्रों को पहचानना मुश्किल है क्योंकि ये आकृतियां समतल हो गई हैं और संभवतः समुद्री पर्यावरण के कारण ये चित्र नष्ट हो गए हैं । कवरत्ती मैं पाए गए ज्यादातर बर्तनों के टुकड़ों मैं गड्ढों के निशान हैं , केवल एक चमकीले बर्तन का टूकड़ा नीले आकृति सहित पाया गया है । एक खाई से प्राप्त मोटे धूसर बर्तन और लाल बर्तन के टुकड़े प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल और मध्यकाल से संबंधित पाये गए हैं जिन्हें अमीनी की एक सार्वजनिक इमारत की नींव की खुदाई के दौरान देखा गया था । (राव एटअल1995–96)

पर्यटकों के वृतांत, उत्कीर्ण लेख एवं मुद्रा संबंधी प्रमाण

प्राग ऐतिहासिक काल से लक्षद्वीप के बारे में भ्रमणकारियों और नाविकों को ज्ञान था। यहां तक कि बौद्ध धर्म की जातक कथाओं तक में इसका वर्णन मिलता है। 'पेरिप्लस ऑफ़ एरिथ्रीयन सी' में कछूए की खोल के निर्यात से संबंधित होने के कारण दामिरिका (तत्कालीन मालाबार का पुराना नाम) के रूप में वर्णित किया गया है। (केसन 1989, स्कॉफ़ 1974) पॉलेमी (ई.पू. 90–168) में वर्णन है कि बड़ी संख्या में द्वीप तामरोबेन (श्रीलंका) के विपरीत में स्थित हैं। (मैकक्रिण्डल 1985) और बाद के समय में एम्मिनस मार्सेलानस (320–390 ईस्वी), फाहियान (ई.पू. 337–422), कास्मे (335–55 ई.पू.) अल मसूदी (896–956 ई.पू.) एवं इब्नबतूता (1304–1368 ई.पू.) ने मालदीप के साथ साथ इन द्वीपों का वर्णन किया है। अरब यात्री इब्न बतूता की कहानियों में लक्ष्यद्वीप का बड़े विस्तार से वर्णन मिलता है।

पल्लव वंश के राजसिंहा के वयालूर शिलालेख (नरसिंह वर्मन) (680–720 ईस्वी) में वर्णन है कि लक्ष्यद्वीप समूह राजा नरसिंहा (सास्त्री 1925–26) के द्वारा जीत लिए गए थे। इस शिलालेख में इन द्वीपों का वर्णन दीपलक्षम के रूप में वर्णित है एवं इन्हें पल्लव वंश के शासन के अंतर्गत बताया गया है। शिलालेख में वर्णन कुछ इस प्रकार ह्वै उन्होंने शाही अधिमान्यता स्थापित की और अपने साम्राज्य की अंतिम सीमाओं तक जिसके अंतर्गत दीपलक्षम (सहस्त्र दीपसमूह) भी शामिल था के शासन का संकल्प लिया्। इसी प्रकार कदम्ब राजवंश के षष्ठदेव (ई.पू. 960–975) के नरेन्द्र शिलालेख के अनुसार षष्ठदेव ने जहाजों की कतार बनाकर एक पुल का निर्माण किया था ताकि लंका के अधिकाधिक निकट पहुंचकर लंका एवं कवदीद्वीप जोकि शायद कावारत्ती द्वीप हो (बारनेट 1982 एवराव 1994) को जीता जा सके।

इससे ज्ञात होता है कि कदम्बा राजवंश अपने पास एक शक्तिशाली नौसेना रखता था। परंतु विद्वानों में इसमें कुछ मतभेद भी हैं। तंजावुर के राजराजेश्वर मंदिर के शिलालेख के अनुसार राजेन्द्र चौल (1012–1044 ईस्वी) ने लक्ष्यद्वीप समेत पूर्व एवं पश्चिमी तट के कई द्विपों को विजित किया था (मन्नाडियार 1977)। ग्यारहवीं शती के संस्कृत ग्रंथ मोक्षवंशम भी राजा वल्लभ ने इस द्विपों को जीत लिया था (राव 1966)।

अगर मुद्राओं का कोई भंडार मिले तो आम तौर पर यही माना जाता है कि यह क्षेत्र किसी राजवंश विशेष के द्वारा शासित था या उसका उस राजवंश से कोई व्यापारिक संबंध रहा होगा। लक्ष्यद्वीप के मामले में 119–138 ईस्वी के 400 से ज्यादा मुद्राओं का भंडार कदमात एवं अंद्रोत (टर्नर 1989 एवं मोहनदास 1951) क्षेत्र से मिले हैं। कदमात में प्रथम सदी

ईस्वी की मुद्राओं का मिलना यह दर्शाता है कि प्रारंभिक ईस्वी सदी के दौरान रोमन साम्राज्य का इस क्षेत्र से प्रत्यक्ष या परोक्ष व्यापारिक संबंध थे और उन्हें इस द्वीपों की स्थिति का ज्ञान था और शायद उन्होंने यहां अपना पड़ाव बनाया होगा।

हाल ही में 1570 ईस्वी में ढाले गए डोगे अल्विसो मोसेनिको की 3 स्वर्ण मुद्राएं कदमात द्वीप में पाई गईं (छबि 6,र–ल)। इन वेनेशियन मुद्राओं का भारत में आयात मसालों और रेशम के बदले में किया गया होगा। यह मुद्राएं शुद्ध सोने की बनी हुई हैं एवं शुद्धता एवं बजन का इसमें उचित निर्वाह किया गया है इसलिए इन मुद्राओं की भारत में मांग थी। इस प्रकार की मुद्राओं को शोहरत के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता था।

लक्ष्यद्वीप में बुद्धत्व

बीसवीं सदी के सत्तर के दशक के पूर्व तक लक्ष्यद्वीप पर बुद्धत्व के प्रभाव का बहुत कम ज्ञान था हालांकि बोद्ध जातक कथाओं में लक्ष्यद्वीप एवं मालदीव द्वीप समूह क वर्णन है। सन 1971 में कावारत्ती के प्रमुख हस्पताल के निकट परीक्षण खुदाई के दौरान एक बौद्ध मूर्ति का मस्तक बरामद हुआ था। यह मस्तक 40 सें. मी. ऊंचा और 30 सें. मी. चौड़ा था और इसका निर्माण कोरल ब्लॉक प्लास्टर एवं कोरल लेप से किया गया था। इसके बाल घड़ी की सूई की दिशा में कुंडलाकार हैं, कान लंबे, परंतु होंठ, नाक एवं आखें क्षतिग्रस्त हैं एवं इनके ऊपर से पलस्तर उतरा हुआ है। ट्रायल खुदाई के बाद 1971 में भा.पु.स. द्वारा मिनिकोय, कावारत्ती, अंड्रोट एवं कलपेनी द्वीप समूह में किए गए अन्वेषण ने कुछ बौद्धमस्तकों पर प्रकाश डाला एवं कलपेनी एवं कावारत्ती की मस्जिदों का निर्माण ईस्लामपूर्व भग्नावशेषों (संभवतः बौद्ध) (शर्मा एवं खान 1994, आई.ए.आर. 1998–84) पर किया गया। मिनिकाय के पल्लीसेरी गांव में एक मकान की नींव की खुदाई के दौरान एक बुद्ध विहार या स्तूप जिसे स्थानीय भाषा में 'मुलाथु' कहते हैं, प्रकाश में आया।

इसी प्रकार 1982 में मिनिकाय के अरेपल्ली एवं अलूदी गांव से कुछ और बुद्ध मस्तक प्राप्त हुए। इन बुद्ध मस्तकों की चेहेरे की विशेषताओं में घुंघराले बाल, लंबे कान एवं माथा आदि हैं। कोरल शिलाओं से निर्मित इसके कुछ हिस्से स्थानीय निवासियों द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिए गए हैं (शर्मा एवं खान 1994 ; सिला त्रिपति एवं गुड़िगर 2001)

अरबी प्रभाव और लक्ष्यद्वीप के पत्थर के लंगर

जनश्रुति के अनुसार लक्षद्वीप मैं इस्लाम अरबी संत उबईदुल्लाह के द्वारा हिजरा 41 मैं लाया गया था जोकि कुछ स्थानीय लोगों को इस्लाम में धर्मानंतरित करने में सक्षम हुए थे और उनकी कब्र अगत्ति द्वीप मैं स्थित है । कुछ अवधि के बाद 139 एएच दिनांकित मुस्लिम कब्र प्रस्तर भी अगत्ति मैं पाए गए । 7 वीं सदी के प्रथमार्ध में ज़्यादातर कब्र प्रस्तर लक्ष्यद्वीप की मस्जिदों के बाहर पाए गए । लक्ष्यद्वीप के लोग 11 वीं और 12 वीं सदी ई में इस्लाम मैं परिवर्तित हुए थे लेकिन उनके इस्लाम ग्रहण करने के काफी पहले से द्वीप वासियों का ओमान और अन्य खड़ी देशों के साथ व्यापारिक संबंध था । इस काल में यह द्वीप नारियल ,नारियल की लंबी लकड़ियों और नारियल की जटा के लिए प्रसिद्ध थे जोकी ओमान और भारत की मुख्य भूमि सहित अन्य देशों को निर्यात किए जाते थे । यहां के निवासी नारियल की लंबी लकड़ियों से नाव बनाते थे । पूरी नाव यानी पतवार, मस्तूल, पाल आदि नारियल के पेड़ से बनते थे । यहां तक कि अरबी और फारसी नाविक जहाजों के निर्माण के लिए नारियल की लंबी लकड़ियों का आयात करते थे और कभी कभी वे मालदीवों सहित इन द्वीपों मैं वहीं पर जहाज बनाने के लिए आते थे । (हौरानी 1995) । समय बीतने साथ लक्ष्यद्वीप और अरब के लोगों के बीच संपर्क घनिष्ठ हो गए और सामुद्रिक व्यापार में तेजी आई थी । लक्षद्वीप में कई मस्जिदों का निर्माण किया गया। मिनीकॉय के जामा मस्जिद मैं भारत–अरबी पत्थर–लंगर की खोज, अरबी जहाजों की इन द्वीपों में यात्रा और लक्ष्यद्वीप के समुद्री इतिहास मैं उनकी भूमिका को दर्शाता है।

भारत अरबी प्रस्तर लंगर चौखट के रूप मैं जामा मस्जिद के प्रवेश द्वार पर स्थापित किया गया था जोकि 1344 हिजरी में बनाया गया था। वह लंगर मस्जिद की मरम्मत के दौरान चौखट से हटाकर एक तरफ रख दिया गया था (चित्र नं 9)। यह 292 सेमी लंबा और 50 सेमी चौड़ा है और यह बलुई पत्थर से बना है । इसके आकार के आधार पर इसका अनुमानित

वजन 896 किलो हो सकता है । यह लंगर बरकरार है और सभी तीनों छेदों को बनाए हुए है । इसे ध्यानपूर्वक तराशा गया है और छेनी के निशान इसकी सतह पर दिखाई दे रहे हैं । लंगर के ऊपरी भाग का एक छोटा से उखड़े हुए हिस्से के अलावा इसमें कोई टूट–फूट नहीं है । एक अन्य वर्गाकार छेद की तुलना में इसके निचले भाग में स्थित वर्गाकार छेद आकार मैं छोटा है । लंगर के ऊपरी भाग संकरा एवं गोल है तथा इसकी मोटाई अपेक्ष्याकृत कम है (चित्र नं 10)। इसकी सतह की दो जगहों पर प्रवाल के विकास मौजूद हैं । लंगर की सतह पर प्रवालो की न्यूनतम वृद्धि यह दर्शाती है कि यह लंगर कम समय के लिए समुद्री वातावण में थे । संभवतः यह लंगर समुद्र से पुनःप्राप्ति के तुरंत बाद ही जामा मस्जिद के चौखट के रूप मैं इस्तेमाल किया गया था (सिला त्रिपति 2009) ।

यह देखा गया है की गोलाकार पत्थर के लंगर का मिनीकॉय के स्थानीय मछुआरों द्वारा इस्तेमाल किया गया था । (जोन्स और कुमारन 1959) । यह लंगर 'मास ओड़ी' के नाम से जाने जानी वाली पारंपरिक नाव में उपयोग में लिया जाता था जोकि 125 मी लंबी और 3 मी चौड़ी नारियल की लकड़ी से बनती थी और साथ ही उसके हर पक्ष मैं 7 से 9 पतवार और 2 मस्तूल होते थे (चित्र नं 11)। इस प्रकार के गोलाकार पत्थर के लंगर को उथले पानी में नाव को उतारे जाने के समय इस्तेमाल किया जाता था । द्वीप पर आसानी से उपलब्धता की वजह से यह गोलाकार पत्थर के लंगर प्रवाल पत्थरों से बना करते थे । एक उपयुक्त आकार का प्रवाल पत्थर का टुकड़ा मछुआरों द्वारा चयनित किया जाता था तथा उस गोल पत्थर को लंगर का आकार दिया जाता था और उसके केंद्र में एक बड़ा छेद किया जाता था जिसमें लकड़ी का कुंडा डाला जाता था। मिनिकाय के अलावा लक्षदीप के किसी द्वीप से गोल पत्थर के लंगर के उपयोग की सूचना नहीं हैं, लेकिन अन्य द्वीपो में उनके उपयोग को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। हालांकि गोल पत्थर के लंगर की सूचना मालदीव से पायी गई थी और मालदीव की स्थानीय भाषा 'दिवेही' में इसे 'फ़ना' के रूप मे जाना जाता है। मालदीव से दूर प्रवाल भित्तियों पर चारा देकर मछली पकड़ने के दौरान 'फ़ना' का प्रयोग किया जाता था । इनका व्यास 40 से 50 सेमी है और यह प्रवाल पत्थर से बना है तथा इसे जरा सा अवतल गोलाकार आकार दिया गया है। लंगर के छेद की सामान्य चौड़ाई 6 से 10 सेमी है, जिसमें एक "v' या दोमुहां कांटे के आकार का एक लकड़ी का कुंदा लगाया गया है। यह कुंदा इस तरह से बनाया गया है कि लंगर "v' के आकार में बना रहता है (चित्र न12)। पिछ्ली सदी तक गोलाकार पत्थर का लंगर का प्रयोग किया जाता था लेकिन लोहे के लंगर की शुरुआत के साथ 'फना' का मालदीव में अस्तित्व समाप्त हो गया ।

लक्षद्वीप के पानी में नष्ट जलयानों का अन्वेषण

एक तरफ़ लक्षद्वीप दक्षिण एशिया और सुदूर पूर्व तथा दूसरी ओर सुएज कैनाल के पुनः खुलने के बाद उत्तर अफ्रिका और पश्चिम अफ्रिका के बीच नौपरिवहन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। जलमग्न प्रवाल भित्तियों और निचले द्विपों के चलते द्वितीय विश्व युद्ध से पहले इन द्वीपों पर प्रकाश स्तंभों के अभाव से अनेक वाष्प इंजन चालित जहाजों की तबाही हुई। भारत के विभिन्न अभिलेखागारों में सुरक्षित समुद्री रिकॉर्ड के अनुसार अगत्ति द्वीप, बंगाराम द्वीप, बैरमगोर भित्ति, छेरियापानी भित्ति, चेतलात द्वीप ,कलपेनी द्वीप, मिनीकॉय और सुहेली पार के अनेक जहाजों की तबाही को दर्शाते हैं। (तालिका1)हालांकि, एनआईओ ने बैरमगोर, मिनीकॉय, और सुहेली पार के पानी में जहाजों की तबाही का प्रारम्भिक अन्वेषण किया। मिनीकॉय और सुहेली पार में डूबे जहाजों का ध्वंशावशेष पानी की गहराई में 4 से 15 मीटर पर स्थित थे ।

1990 में भारतीय नौसेना के सहयोग से एनआईओ ने बैरमगोर चट्टान में डूबे जहाजों के ध्वंशावशेष का अन्वेषण प्रारम्भ किया । आधुनिक मशीनों एवं उपकरणों के साथ अच्छी तरह से सुसज्जित जहाज आईएनएस संधायक अन्वेषण के लिए तैनात किया गया था । प्रारंभ में एक भूभौतिकीय सर्वेक्षण किया गया उसके बाद अन्तर्जलीय सर्वेक्षण किया गया । बाइरामगोरे चट्टान निम्न ज्वार के दौरान ही दिखाई देती है । उच्च ज्वार के दौरान पूरी चट्टान जलमग्न हो जाती है और लहरों का टूटना बढ़ जाता है । अन्वेषण में इस भित्ति से जहाजों में प्रयोग में लाए जाने वाले मिट्टी के बर्तन और धातु के टुकड़े मिले (राव 1994) । इसी प्रकार भारतीय नौसेना, पंडिचेरी विश्वविद्यालय, एवं जर्मनी की अनुसंधान संस्थान नें 'मर्काटॉर' पर जहाजों की तबाही और जर्मनी के व्यापारिक केंद्रों के अन्वेषण हेतु एक अभियान चलाया जिसमें लक्ष्यद्वीप समेत भारतीय तट भी शामिल थे। अप्रैल 1993 मैं भारतीय नौसेना के समुद्री पुरातत्व क्लब ने बंगाराम के उत्तरी चट्टान में अंतर्जलीय अन्वेषण

किया और एक जहाज के ध्वंशावशेष का पता लगाया । जहाज के ध्वंशावशेष 5000 वर्ग मीटर के एक क्षेत्र में 60 मीटर पानी की गहराई मैं बिखरे हुए है । इस अन्वेषण ने जर्मन जहाज के भग्नावशेष से मिट्टी के वर्तन और दो फाल वाले लोहे के लंगर को प्रकाश में लाया है । (गुपचुप 1997)

चर्चा एवं निष्कर्ष

लक्ष्यद्वीप में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एवं तत्पश्चात एन.आय.ओ. के पुरातात्विक अन्वेषणों से पूर्व इन द्वीपसमूहों में मानव के आगमन पर विविधतापूर्ण अभिमत थे। अन्वेषणों प्राप्त तथ्यों के अनुसार इन द्वीपसमूहों में मानव निवास प्राग ऐतिहासिक काल से शुरु हो गया था। अगत्ति, अमिनी, अंड्रोट एवं कावारत्ती सर्वाधिक पहले वसे हुए द्वीप हैं। आगे इन प्रमाणों से यह भी पता चलता है कि लक्षद्वीप द्वीपसमूह पर मुख्य भूमि से बौद्ध, मुसलमान एवं अन्य धर्मावलंबियों ने कब्जा कर लिया था। चूंकि लक्षद्वीप व्यापार मार्ग में पड़ता था, यह विश्वास किया जाता है कि प्राग ऐतिहासिक काल से पूर्व इस पर अधिकार किया गया होगा जिसे साइगल (1990) के निष्कर्ष पुष्ट करते हैं। रोमन सिक्कों के आविष्कार एवं अल मसूदी (896–956 ईस्वी) एवं इब्न बतूता (1304–1368 ईस्वी) के विवरणों यह दर्शाते हैं कि यह द्वीप रोमन एवं अरब नाविकों को ज्ञात थे एवं स्थाई निवासियों एवं भारत एवं विदेश नाविकों के मध्य माल का विनिमय होता था।

इन द्वीपों पर बौद्ध प्रतिमाओं, विहार आदि का मिलना यहां बौद्ध धर्म की उपस्थिति की पुष्टि करता है। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में और संभवतः जब राजा अशोक ने अपने धर्मप्रचारकों को श्री लंका भेजा था तब लक्ष्यद्वीप पर बौद्धत्व का आगमन हुआ होगा। बौद्ध मूर्तिकला एवं विहारों का इन द्वीपसमूहों में निर्माण शायद गुप्त काल के बाद से प्रारंभ हुआ होगा।

लक्ष्यद्वीप के समुद्रों में कई जहाज़ डूबे पर इनमें से कुछ के ही दस्तावेज़ प्राप्त होते हैं। रात्रिकालीन नौसंचालन, प्रकाश स्तंभों की कमी एवं चक्रवात इन जहाजों के डुबने का प्रमुख कारण रहा होगा। दस्तावेज़ यह बताते हैं कि अधिकतर जहाज प्रस्तर भित्तियों (reefs) के निकट डूबे हैं जिससे यह संकेत मिलता है कि प्रकाश स्तंभों के न होने के साथ साथ रात्रिकालीन नौचालन भी इसका प्रमुख कारण रहा होगा। बायरामगोर, चेरियापानी रीफ़्स एवं मिनिकॉय लक्ष्यद्वीप क्षेत्र में प्रमुख जहाज़ डूबने के क्षेत्र हैं।

आभार

इस आलेख के लेखक इस अध्ययन के लिए प्रोत्साहन हेतु निदेशक, राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के आभारी हैं। हम इस आलेख को पूरा करने में उनके मुल्यवान सुझावों के कारण अपने सहकर्मियों का भी आभार व्यक्त करते हैं और एस.बी. चितारी, रवीन्द्र उचिल, एवं उदय कुमार जावाली को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के छायाचित्रों एवं नक्शों की कंप्यूटर ट्रेसिंग एवं आरेखों की प्रस्तुति के लिए आभार व्यक्त करते हैं। यह एन.आय.ओ. का योगदान सं. .... है।

References

Barnett, L. D. 1982. Inscriptions at Narendra, *Epigraphia Indica* 13: 298-326.

Casson, L. 1989. *The Periplus Maris Erythraei*. Princeton: Princeton University Press.

Gaur, A. S., K. H. Vora, Sundaresh., Sila Tripati., P. Gudigar., and S. N. Bandodkar. 1998.

Exploration of steam engine wrecks off Minicoy Island, Lakshadweep, India, *International Journal of Nautical Archaeology* 27 (3): 225-236.

Gabriel, P.C.T. 1989. *Lakshadweep-History, Religion and Society.* New Delhi: Books and Books.
Gupta, S. S. 1995. Buddhist remains in Maldives, *Puratattava* 25: 77-80

Gupchup, A. V. 1997. The Mercator Expedition—To locate the trade ports of the Germans who first came to India in 1505 and documentation of wreck of that period. In *An Integrated Approach to Marine Archaeology* (S. R. Rao Ed.), pp. 47- Goa: Society for Marine Archaeology.

Heyerdahl, Thor. 1986. *The Maldives Mystery*. London: Allen and Unwin.

Hourani, G. F. 1995. *Arab Seafaring in the Indian Ocean and Early Medieval Times.* Princeton:

Princeton University Press.

Archaeological Survey of India. *Indian Archaeology - A Review*: 1983-84: 48.

Archaeological Survey of India. *Indian Archaeology - A Review*: 1986-87: 175-177.

Jones, S. and M. Kumaran. 1959. The fishing industry of Minicoy Island with special Reference to the Tuna fishery, *Indian Journal of Fisheries* **6 (1):** 30-54.

Mannadiar, N. S. (Ed.), 1977. *Gazetteer of India – Lakshadweep*. Coimbatore: Government of India Press.

McCrindle, J. W. 1985. (Reprint). *Ancient India as described by Ptolemy.* New Delhi: Today and Tomorrow's Printers and Publishers.
Mohandas, P. N. 1951. *Our numismatic collections*, Madras Central Government Museum Centenary Souvenir *(1851-1951).* pp. 99-102, Madras.

Pyrard, F. 1888. *The voyage of Francois Pyrard of Laval to the East Indies, the Maldives, the Moluccas and Brazil* 2(1) (Tr. Albert Gray.) London: Hakluyt Society. First Series No. 77.

Rao, K. V. 2006. Buddhist Vestiges in Lakshadweep. In *Mahasenasiri, Riches of Indian Archaeological and Cultural Studies, A Felicitation Volume in honour of Dr. I. K. Sarma* (P. Chenna Reddy Ed.), pp. 267-273. Delhi: Sarada Publishing House.

Rao, T. Gopinath. 1916. *Tranvancore Archaeological Series.* Vol. 2, Tranvancore.

Rao, S. R. 1973. *Lothal and Indus Civilisation*. New York: Asia Publishing House.

Rao, S. R. 1994. Marine Archaeological exploration of Byramgore reef of Lakshadweep in the Indian Ocean. In *Role of Universities and Research Institutes in Marine Archaeology* (S. R. Rao Ed.), pp. 67-69. Goa: Society for Marine Archaeology.

Rao, S. R., K. H. Vora, A. S. Gaur, P. Gudigar, Sundaresh & Sila Tripati., 1995-96. A preliminary shipwreck exploration off Lakshadweep, *Journal of Marine Archaeology* 5-6: 23-32.

Saigal, O., 1990. *Lakshadweep.* New Delhi: National Book Trust.

Sastri, H. K. 1925-26. The Vayalur inscription of Rajasimha II, *Epigraphia Indica,* (Reprinted in 1983), Vol. XVIII, pp. 145-52. New Delhi: Archaeological Survey of India.

Schoff, W. H. 1974. *Periplus of the Erythraean Sea: Travel and trade in the Indian Ocean by a merchant of the first century.* Delhi: Oriental Books.

Sharma, A. K. and M. F. Khan. 1994. Buddha heads and some grave head stones from Lakshadweep. In *Role of Universities and Research Institutes in Marine Archaeology* (S. R. Rao Ed.), pp. 129-131. Goa: Society for Marine Archaeology.

Sila Tripati. 2009. Stone anchors from Minicoy Island, Lakshadweep, India. *International Journal of Nautical Archaeology* 38 (2): 406-412.

Sila Tripati. and P. Gudigar. 2001. Shipwreck archaeology of the Lakshadweep Islands, west coast of India, *International Journal of Nautical Archaeology* **30 (**1): 37-47.

Sila Tripati. 1999, Marine investigations in the Lakshadweep Islands, India. *Antiquity* 73 (282): 827-835.

Turner, P. J. 1989. *Roman coins from India*, Institute of Archaeology, Occasional Publication No. 12. London: Royal Numismatic Society.

Vora, K. H. 1994. Marine Archaeological Explorations in Lakshadweep Waters, *Technical Report No: NIO/TR-9/94*. pp. 1-27. Goa: National Institute of Oceanography.

छबियों की सूची:

1. लेख में वर्णित लक्ष्यद्वीप दीपसमूह को दर्शाती छबि
2. अर्ड्रोथ द्वीप पर बसती के अवशेष को दर्शाते प्रभाग
3. अर्ड्रोथ द्वीप के एक ओर स्थल पर बसती के अवशेष को दर्शाते प्रभाग
4. कावारत्ती द्वीप से संगृहित लाल एवं अन्य मिट्टी के बर्तन.
5. अर्ड्रोथ द्वीप से संगृहित लाल एवं अन्य मिट्टी के बर्तन.
6. स्वर्ण मुद्राएं: यह एक संत(क्राईस्ट ?) की छबि को दर्शाता है जबकि इसके विपरीत में वेनिस के डोगे संत मार्क से एक पताका लेने के लिए घुटनों पर झुक रहे हैं।

7. अर्ड्रोथ द्वीप से प्राप्त बुद्ध का मस्तक

8. अर्ड्रोथ द्वीप से प्राप्त यकाशा मुख

9. फुनहिलोल. मिनिकॉय की मस्जीद में पड़े हुए इंडो–अरबियन प्रस्तर लंगर

10. मिनिकॉय में विस्तृत नाप के साथ इंडो–अरबियन प्रस्तर लंगर

11. चारा के द्वारा मछली पकड़ने हेतु मिनिकॉय में प्रयुक्त गोलाकार प्रस्तर लंगर

12. मालद्वीप के गोलाकार 'फ़ना' लंगर

13. सुहेली पार चट्टान पर गिरे विनष्ट जहाजों के अवशेष

14. मिनिकॉय के आसपास हुए जहाजों के विनाश के अवशेष जैसे शहतीर और ढ़ांचे

15. मिनिकॉय के आसपास हुए जहाजों के विनाश में इंजिन, बॉयलर के अवशेष

तालिका 1: लक्ष्यद्वीप के समुद्र में नष्ट जलयान

संख्या	जहाज़ का नाम	विध्वंस का वर्ष	विध्वंस का स्थान	स्थान
1	बैरामगोर	1828	बैरामगोर चट्टान	बाम्बे
2	सेलोन	1844	चेरियापानी चट्टान	बाम्बे
3	फाल्कन	1844	बैरामगोर चट्टान	अज्ञात
4	फुट्टी रुसुलश्र	1848	अगत्ती	अज्ञात
5	वाईजर	1853	चेरियापानी चट्टान	बाम्बे
6	होमिडि	1854	चेरियापानी चट्टान	मॉरिशस
7	अल्केमिस्टीं	1858	चेरियापानी चट्टान	बाम्बे
8	सुल्तान	1858	चेरियापानी चट्टान	बाम्बे
9	होपवेल अबेल	1860	कलपेनी द्वीप	अज्ञात
10	तसमान	1865	बैरामगोर चट्टान	लंदन
11	जनरल सिम्पसन	1863	चेटलट द्वीप	इंग्लेंड
12	लॉर्ड बोर्गहम	1865	चेरियापानी चट्टान	अज्ञात
13	अमेलिया	1880	कलपेनी द्वीप	अज्ञात
14	महाबलेश्वर	1881	बंगाराम द्वीप	अज्ञात

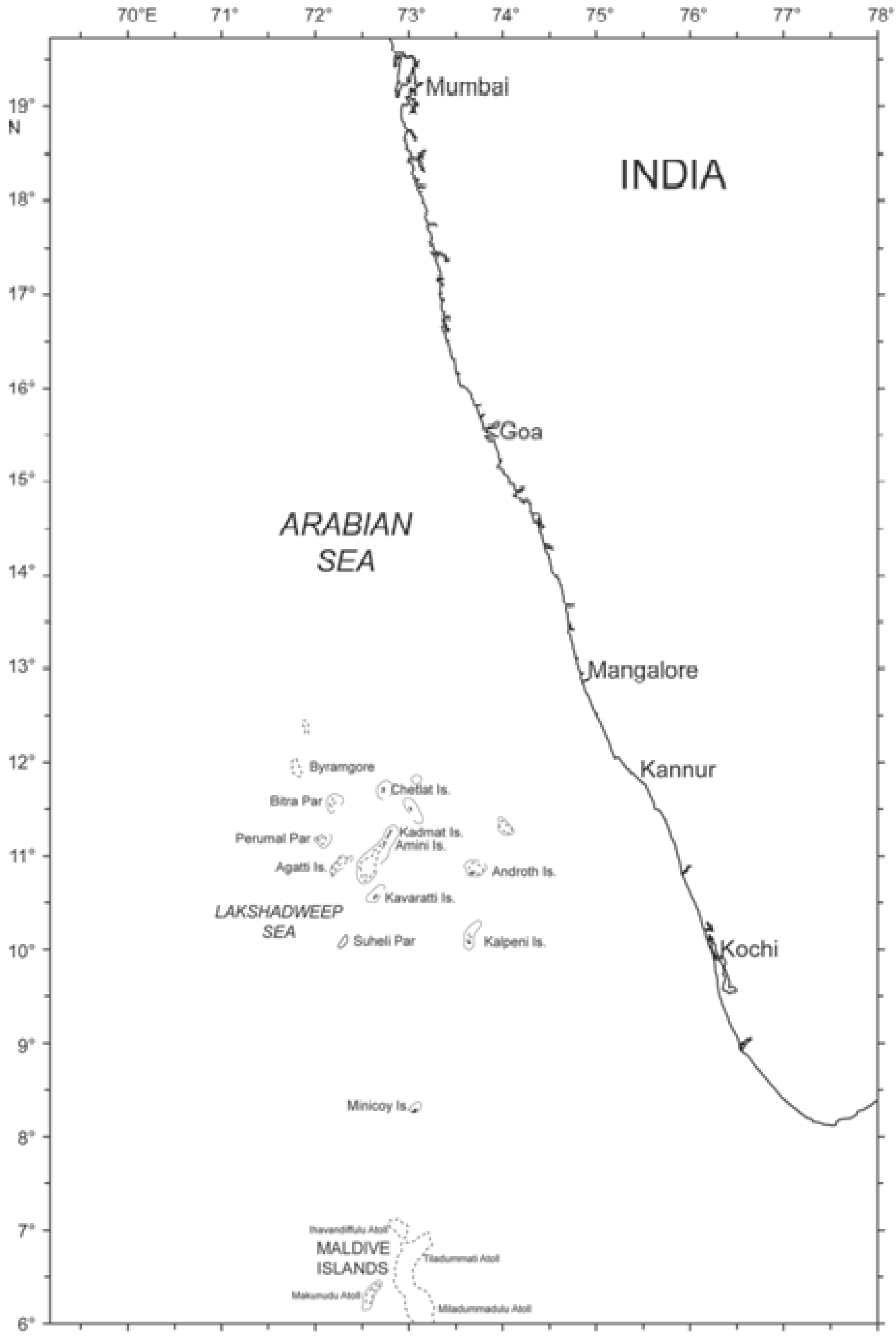

Fig. 1 Figure showing Lakshadweep Islands mentioned in text

Fig.2 Section showing habitational remains at Androth Island.

Fig. 3 Section showing habitational remains at another site on Androth Island.

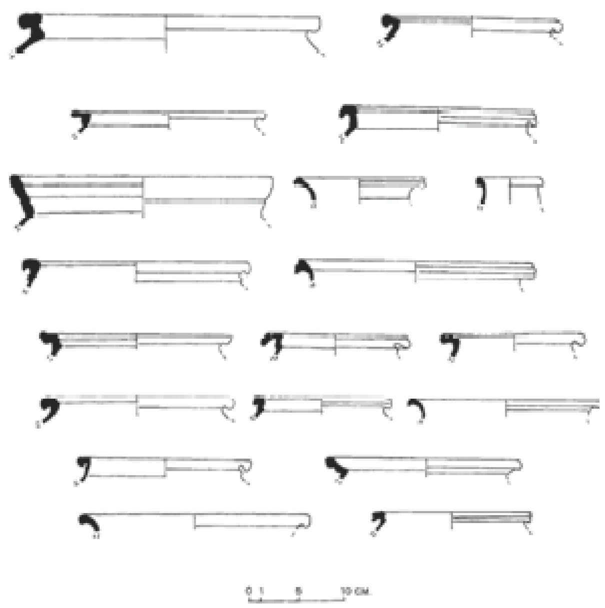

Fig.4 Red ware and other associated pottery collected from Kavaratti Island.

Fig.5 Red ware and other associated pottery collected from Androth Island.

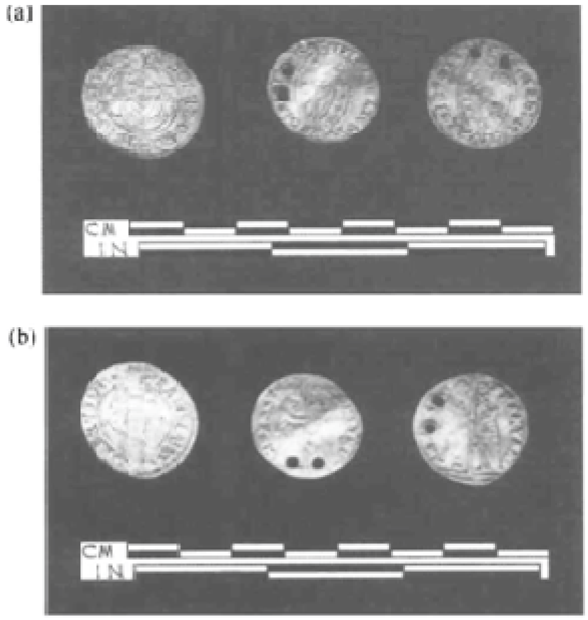

Fig. 6 Gold ducats. The obverses show a figure of a saint (Christ?) whereas the reverses display the Doge of Venice kneeling to receive a banner from St Mark.

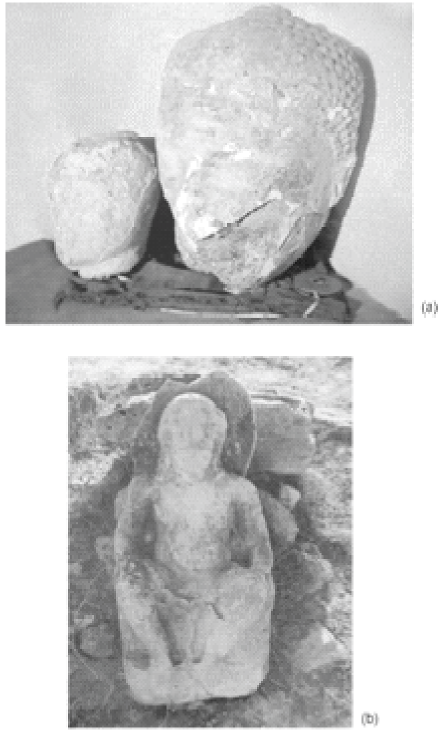

Fig.7 Buddha heads from Androth Island.

Fig.8 Yaksha face recovered from Androth Island.

9. Indo-Arabian stone anchor lying inside the mosque of Funhilol, Minicoy.

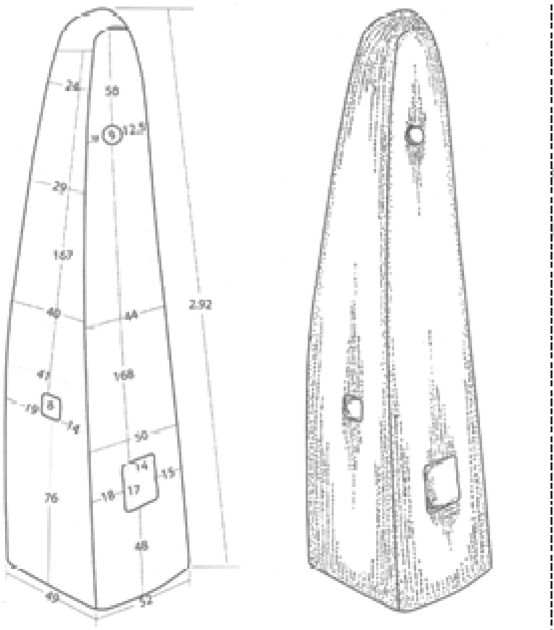

10. Indo-Arabian stone anchor of Minicoy with detailed measurements.

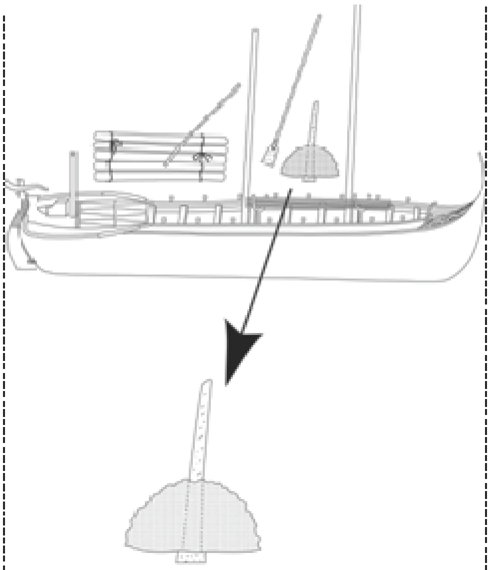

11. Ring stone anchor of Minicoy used for bait fishing.

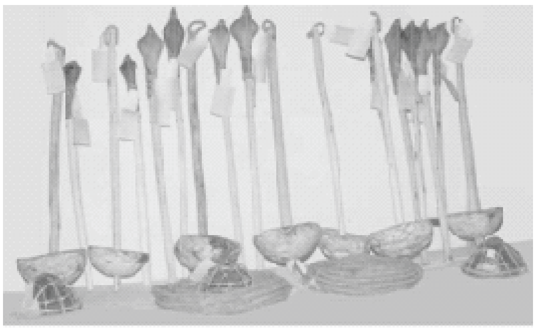

12. 'Fanaa' ring stone anchors of Maldives.

13. Shipwreck remains lying over Suheli Par Reef.

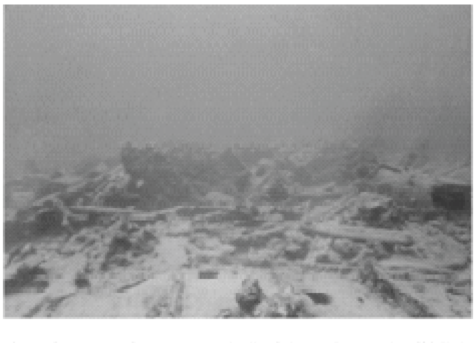

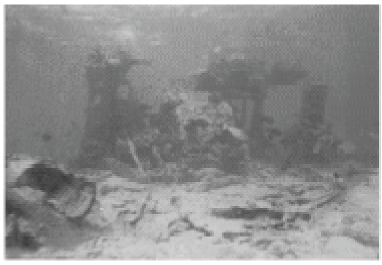

15. Remains of engine, boiler and flywheel of the shipwreck off Minicoy Island.

14. Remains of beams, frames and hull of the shipwreck off Minicoy Island.